International Indexed, Refereed Research Journal, ISSN-2250-253X,(Print), E-ISSN-2320-544X, ISSUE-12, VOL-I, Dec, 2013

शोध पत्र- हिन्दी

डॉ0 प्रद्युम्न भल्ला की कहानियों में शिल्पगत

*डॉ० कृष्ण कुमार

* प्रिंसिपल एस एस एम शिक्षण महाविद्यालय कलायत, जिला कैथल हरियाणा

यह शोध पत्र डॉ० प्रद्युम्न भल्ला की कहानियों में शिल्पगत विशेषताओं पर आधारित है इस शोध पत्र में डॉ० प्रद्युम्न भल्ला की कहानियों की विवेचना शिल्प के आधार पर की गई है। साहित्य का सर्जन भाव, विचार और कल्पना के समन्वय द्वारा होता है यदि इन तीनो का समन्वित रूप मन ही मन रह जाए, उसकी अभिव्यक्ति न हो सके तो उससे किसी का प्रयोजन सिद्ध नही होगा साहित्याकार अपनी संवेदनात्मक अनुभूतियों को दूसरों पर प्रकट करना चाहता है कि उसका रूप कैसा है। यही पारस्परिक आदानप्रदान साहित्य का मूल और शिल्प इसे साकार रूप देता है। इसलिए उनकी कहानियाँ शिल्पगत तवो से जगमगा रही हैं।

प्रस्तावना: डॉ० प्रद्युम्न भल्ला की एक उर्जावान साहित्यकार एंव मधुर व्यक्तिव के धनी है इनकी कहानियाँ हर दृष्टि से सराहनीय है डॉ० प्रद्युम्न भल्ला आज एक कहानीकार के रूप अपनी पहचान बना चुके हैं।

डॉ० प्रद्युम्न भल्ला की कहानियों में शिल्पगत

शिल्प : अर्थ एंव परिभाषा :

शिल्प वह क्रिया है जिसके माध्यम से साहित्यकार अपनी संवेदना को रूपाकर देता है। उसे शब्दों में बांधता है। प्रत्येक साहित्यकार का कहने का ढंग अलगअलग होता है। इसी कहने के ढंग को उसका शिल्प कहा जाता है। डॉ० मदान लिखते है कि शिल्प विधि रचना प्रक्रिया का एक पक्ष है। रचना का वक्तव्य शिल्प के भीतर से व्यक्त होता है। इसके द्वारा सम्प्रेषित होता है। शिल्प विधि से आशय रचना की अभिव्यक्ति पद्धति से है''१

साहित्यशास्त्र में शैली की परिभाषा देते हुए लिखा है कि ''शैली अनुभूति विषय वस्तुओं को सजाने के उन तरीकों का नाम है, जो उस विषय वस्तु की अभिव्यक्ति को सुन्दर एंव प्रभावपूर्ण बनाते है।''२

डॉ० लक्ष्मी लाल नारायण ने शिल्प की परिभाषा इस प्रकार दी है''कला के विभिन्न तत्वो अथवा उपकरणों की योजना का वह विज्ञान, वह ढंग जिससे कलाकार की अनुभूति अमूर्त से मूर्त हो जाए''३।

हिन्दी शब्दकोश के अनुसार, 'शिल्प से अभिप्राय हाथ से कोई वस्तु तैयार करने अथवा दस्तकारी या कारीगरी से है''४।

इस प्रकार यह सब रचनाकार की इच्छा पर निर्भर करता है कि वह किस प्रकार का शिल्प बनाना चाहता है। किसी भी वस्तु का आंतरिक पक्ष चाहे कितना ही सुन्दर क्यों न हो परन्तु जब तक उसका बाहरी पक्ष सुन्दर नही होगा, वह हमें आकर्षित नही कर सकती। भीतरी सौन्दर्य के साथ बाहरी सौन्दर्य का होना भी आवश्यक है। यही स्थिति भाव पक्ष के सबल और सुन्दर होने के साथसाथ उसका कलापक्ष भी आकर्षित होना चाहिए। उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि किसी कृति के निर्माण में जिन उपादानों द्वारा कृति का ढांचा तैयार किया जाता है, वे सब उसके शिल्पतत्व कहे जाते है, अब हम उन्ही तत्वों के आधार पर 'डॉ० प्रद्युम्न भल्ला' की कहानियों में शिल्पगत विशेषताओं पर पर विचार करेगें:

शिल्पगत स्पष्टता :

साहित्य में जिन्दगी की बेतरतीब घटनाओं को एक तरतीब देना ही शिल्पगत है। कहानी के जीवन में लेखक का व्यक्तित्व भी सम्माहित है, जिसने प्रत्यक्ष जीवन की सामग्री को अपने ढंग से उठाया, जोडा और पुन: रचा है। इन सबसे मिलकर जब कहानी का रूप तैयार होता है, उसी में उसकी शिल्पगत स्पष्टता निहित है।

डॉ० 'प्रद्युम्न भल्ला' जी एक अनुभवी अध्यापक व ज्ञान के पूर्ण व्यक्तित्व के धनी है। जिन्हें शिल्प के बारे में पूरा ज्ञान है। उनकी उनके कहानियों में शिल्पगत तत्वों की सहायता पूर्ण रूप से देखी जा सकती है। उनकी कहानी, 'दूर के रिश्तेदार', 'इला', 'एक कैथ और', 'पिता जी होता वह' तथा 'एक महाभारत और' आदि कहानियाँ है जिनमें शिल्पगत रूपष्टता को भलीभाँतिपूर्वक देखा जा सकता है। क्योंकि ये कहानियाँ आम आदमी के सुखदुख व आन्तरिक अभिव्यक्ति की कहानियाँ है जो मध्यमवर्ग के परिवारों पर दर्शायी गई हे।

परिवेश

कहानी में कोई भी घटना किस समय और किस स्थान पर घटती है वह सब परिवेश के अन्तर्गत आता है। डॉ० सुरेश सिन्हा के अनुसार ''कहानी में चित्रित, समाज, इतिहास, परिवार, धर्म या राष्ट जो कुछ भी उद्घाटित होता, वह परिवेश ही निर्मित करता है''५।

यह भी लेखक पर ही निर्भर करता है कि वह ग्रामीण परिवेश पर या शहरी परिवेश पर लिखता है लेकिन डॉ० प्रद्युम्न भल्ला जिसने लगभग कई कहानियाँ ग्रामीण परिवेश में लिखी है।

अनेक कहानियों में ग्रामीण परिवेश की झलक को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है जिसमें से पुराने मकान का संवाद देखिए, जिसमें ग्रामीण परिवेश का पता चलता है जो कई बार जी करता है कि सब छोड छाड़ कर यहाँ रहे पर कहाँ छोड़ते है तुम्हारे भतीजे बड़े ताजी कहते है। असल बात तो ये है भाई साहब ये मोह ममता आप ही से नहीं छुटती है। मूल से सूद ज्यादा प्यारा होता है''।

पिताजी कहते । जाते समय मकान की दहलीज से चिपक कर रोने लगते है। गांव की मिट्टी उठाकर जेब में रख लेते है। पिता ही पिसा हुआ मक्की का आटा, भूट्टे, गन्ने, गांव के कोल्हु का गुड़ सब बांध देते''६।

इसके अतिरिक्त 'दीनदयाल लौट आओ' कहानी में ग्रामीण परिवेश के दर्शन भलीभान्ति होते है। अत: प्रद्युम्न जी ने इन कहानियों में सामाजिक विसंगतियों, गरीबी और गांव व शहर के अन्तर को दर्शाया है।

पात्र

समाज के व्यापक धरातल पर विचरण करने वाले साधारण और असाधारण मानव कहानी के सीमित परिवेश में पात्र के रूप में प्रवेश करते है। अर्थात् जिनकी कहानी को आगे बढ़ाने या चलाने में अहम् भूमिका होती है उसे पात्र कहा जाता है। ये ही पात्र कथाकार की कल्पना और अनुभूति के संयोग के जनजीवन से सम्बन्धित समस्याओं का उद्घाटन करते हैं। प्रद्युम्न भल्ला जी की कहानियों में आत्मा को भी पात्र का स्थान दिया गया है। 'एक मरे आदमी की डायरी' कहानी में कुमार नाम जो युवक है वह आत्मा है जो समाजकल्याण के कार्य करता है। यथा'मै यहाँ सार वर्ष सात महीने साढे तीन दिन की आयु लेकर आयु लेकर आया हूं। सब मुझसे नफरत करेंगे क्योकि मुझे इसी में सुकून सा मिलेगा''७।

इस प्रकार प्रद्युम्न जी की कहानियों में उम्र के हर दौर के पात्र जैसे वृद्ध, युवक, बालक, पीड़ित, नारी सभी आ जाते है। इन्होंने अपनी कहानियों में लगभग सभी समस्याओं को चित्रित किया है जिनमें बेरोजगारी मुख्यत: है।

संवाद योजना

संवाद कहानी में एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। शिल्प की दृष्टि से संवाद कथानक, प्रस्तुतिकरण एंव चरित्रविश्लेषण में बडा भाग लेते है। संवादों की भावाभिव्यक्ति की नाटकीयता से ही पात्रों के चरित्रों पर सुन्दर ढंग से प्रकाश पडता है। उनका व्यक्तित्व पूर्णतया स्पष्ट होता है और पाठकों तथा पात्रों के मध्य में से निकलकर सम्पर्क स्थापित करता है''८।

प्रद्युम्न जी की कहानियों में संवादयोजना की झलक स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। यथा''मै कुछ कहना चाहता था।''

''बैठिए, कहिए''

''वो अपने, एक गर्ल विद ए डिफरैन्स क्यों कहा?''

''आई थिंक, हम कही और बैठ सकते है।''

''क्यों नही, मुझेत्र''

''आपको कैसे मालूम?'' विवके के विवके को झटका लगा''९।

अत: कहा जा सकता है कि 'भल्ला' जी की होने न होने का दर्द', 'अजूबा', 'पिता जी बोलते रहे' , आदि अनेक कहानियाँ है जो संवाद प्रधान है।

भाषा

भाषा ही अभिव्यक्ति का सर्वोम साधन है क्योंकि भाषा के द्वारा ही लेखक अपने दय के भावों एव विचारों को अभिव्यक्त करता है तथा इसी माध्यम के द्वारा लेखक के भाव एंव विचार पाठक पहुँचते है एवं समझे जाते है। भाषा प्रभावोत्पादक, सहज, सुन्दर, शुद्ध, स्वाभाविक तथा परिष्कृत और भावों के अनुकूल है। सशक्त एवं समर्थ भाषा के द्वारा ही भावों की अभिव्यक्ति सशक्त एवं प्रभावशाली होती है।

डॉ० प्रद्युम्न भल्ला की कहानियों की भाषा जन साधारण की भाषा से मेल खाती है। उन्होंने अपनी भाषा में हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी के शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है। भाषा भावों के अनुकूल, सरल व प्रसगांनुकूल है। कवि ने विदेसज शब्दो के अन्तर्गत उर्दू व अंग्रेजी शब्दो का प्रयोग किया है। परन्तु इन शब्दों का प्रचलन हिन्दी में इतना सामान्य हो गया है कि ये अब हिन्दी के अपने शब्द ही बन गए है, यथासोसायटी, स्टेटस, गोश्त, नकाब, डिफरैन्स आदि। इस प्रकार प्रद्युम्न भल्ला जी ने ऐसी भाषा का प्रयोग किया है जो सामान्यजन के समझ में आने वाली है ।

शैली

जब कोई विषय आकर्षक, रमणीय और प्रभावोत्पादक रूप में अभिव्यक्त किया जाता है तब हम उसे साहित्य जगत में शैली कहते है। प्रत्येक लेखक की अपनी एक विशिष्ट शैली और जीवन के प्रति एक खास दृष्टि होती है। जिसकी अभिव्यक्ति वह अपनी रचनाओं के माध्यम से करता है। प्रद्युम्न भल्ला की कहानियों में आत्मकथात्मक, संकेतात्मक और बिम्बात्मक शैली का प्रयोग हुआ है:

आत्मकथात्मक शैली

इस शैली में कहानीकार स्वयं प्रथम पुरूष के रूप में बीती हुई घटनाओं को याद करते हुए चलता है। इसे चरित्र शैली अथवा पुरूषात्मक शैली भी कहा जाता है। शैली की विशिष्ट्ता के कारण कहानी में आत्मीय एवं सार्थकता झलकने लगती है।

सभी शैलियों में यह सर्वाधिक प्रभावपूर्ण शैली मानी जाती है। प्रद्युम्न जी ने ''लौटते कदमों का सुख'' आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई कहानी है यथाएकएक कर तीनों लडकियाँ ब्याह दी माँ ने। अब तक मुझे भी एक सरकारी कार्यालय में कलर्क की नौकरी मिल चुकी थी जो पिता जी के एक अच्छी पहुँच वाले मित्र के घर और फैक्टरी के बीस चक्कर काटने और माँ को बारबार ले जाने, पुराने सम्बन्धों का वास्ता देने के परिणामस्वरूप किए गए एहसान का प्रतिफल थी''१०।

मेरा जीवन अधूरा सा हा गया है। जिस सान्निध्य, स्नेह की झलक मैने शिखा में महसूस की थी वह न जाने कैसे प्यार में परिवर्तित हो गई थी और मैं उस परिवर्तित, अनुारित से प्रश्न को झेल नही पा रहा था। काश कही कोई उतर मिल जाए मुझे अपने उस अनुतरित से प्रश्न का''११।

संकेतात्मक शैली

जब कहानी वर्णनात्मक न होकर सांकेतिक भाषा में लिखी जाए तो ऐसी शैली को संकेतात्मक शैली कहते हैं इस शैली में घटनाओं का ज्यादा फैलाव न होकर घटनाओं की सूक्ष्मता और गहराई होती है।

डॉ० प्रद्युम्न भल्ला जी की 'सफर के साथी', 'जूता', में इसी तरह की शैली है।

'जूता' कहानी की पंक्तियाँ इस प्रकार है:

''जान बची तो लाखों पाए'' मन ही मन हनुमान चालीसा पढते हुए दीनदयाल घर लौट आए। कमबख्त एक महीने का राशन जूतों में ही उडा देना चाहता था''१२।

बिम्बात्मक शैली

बिम्ब वे होते है जिनके द्वारा लेखक अपनी भाषा को सजीव एवं चित्रात्मक रूप प्रदान करता है। बिम्बों के कारण भाषा में सरलता, स्पष्टता एवं बोधगम्यता आ जाती है। स्थितियों अथवा पात्र गत मनोवृति को साकार रूप देने के लिए रचनाकार बिम्बों का सहारा लेता है। ''चैन की नींद'' कहानी की पंक्तियां इस प्रकार से हैराजेश तो मानो जड हो गया था। उसे लगा जैसे रेणू नही कोई देवी इस धरती पर अवतरति हुई है''१३।

''लौटते कदमों का सुख'' कहानी की पंक्तियॉ इस प्रकार है: ''देख, बेटा अब मै तो नदी के किनारे खडे उस वृक्ष का वह पाा हूं जिसे कभी भी वक्त की आंधी उडा कर साथ ले जा सकती है''१४।

उद्देश्य

कोई भी रचना की जाए उसका कोई न कोई तो उद्देश्य अवश्य होता है। बिना उद्देश के तो कहानी हो या कथा रचना करना सम्भव ही नही है। उसमें किसी ऐसी मूल संवेदना का चित्रण होता है, जिसका अनुभव कर पाठक उसके विषय में सोचने पर मजबूर हो जाता है। डॉ० प्रद्युम्न भल्ला' जी कि कहानियों में दहेज प्रथा, बेकारी, बेरोजगारी आदि के उद्देश्य को लेकर लिखी गई है।

'रिसतेरिश्ते', 'हम जरूर जीतेंगे', 'दूर का रिश्तेदार', 'इला', 'होने न होने का दर्द, 'एक महाभारत और', मंजिल की चाह', आदि कहानियॉ है जिनके शीर्षक में ही उेश्य को स्पष्ट रूप से देख जा सकता है। इनकी कहानियों में जीवन की व्यावहारिकता का संजीव चित्रण स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि 'प्रद्युम्न भल्ला' जी की कहानियॉ शिल्पगत दृष्टि से सराहनीय है जिनमें शिल्पगत स्पष्टता, परिवेश, पात्रता, संवादयोजना और भाषा के सन्दर्भ में कहानियॉ बहुत ही प्रभावशाली है। शैली को देखा जाए, तो इनकी कहानियों में आत्मकथात्मक, संकेतात्मक, बिम्बात्मक तीनों शैलियों का समायोजन बडे ही अनूठे ढंग से किया गया है। कहानियों के शीर्षक छोटे व बडे दोनो प्रकार के है। भाषा का प्रयोग इतना सरल एवं सहज है कि सामान्य स्थितियों को भी भाषा के माध्यम से सटीक एवं साकार रूप प्रदान किया गया है। इस प्रकार कहा जा सकता है।कि 'डॉ० प्रद्युम्न भल्ला' जी की कहानियॉ शिल्पगत तत्वों से पूर्ण रही है।

संदर्भ ग्रंथ

१ ओम शुकल, हिन्दी उपन्यास की शिल्पविधि का विकास, पृ० ४८
२ डॉ० इन्द्रनाथ मदान, हिन्दी कहानी: पहचान और परख, पृ० ७३
३ डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल, हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास, पृ० १०३
४ डॉ धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश, पृ० ७३७
५ डॉ० सुरेश सिन्हा, हिन्दी कहानी उद्भव और विकास, पृ० ९८
६ डॉ० प्रद्युम्न भल्ला, पुराना मकान, पृ० ७०
७ डॉ० प्रद्युम्न भल्ला, एक मरे आदमी की डायरी, पृ० ३९
८ डॉ० सुरेश सिन्हा, हिन्दी कहानी उद्भव और विकास, पृ० ९८
९ डॉ० प्रद्युम्न भल्ला, एक लडकी अजीब सी, पृ० ४५
१० डॉ० प्रद्युम्न भल्ला, लौटते कदमों का सुख, पृ० १६
११ डॉ० प्रद्युम्न भल्ला, अनुतरित, पृ० ८८
१२ डॉ० प्रद्युम्न भल्ला, जूता, पृ० ७८
१३ डॉ० प्रद्युम्न भल्ला, चैन की नींद, पृ० ५५
१४ डॉ० प्रद्युम्न भल्ला, लौटते कदमों का सुख, पृ० १७